HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-III (Achievements Of Mohammad bin Tuglak)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 29

"मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र एवं उपलब्धियों".

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में गुण अवगुण आकर्षण–विकर्षण एवं जिज्ञासा का पात्र मोहम्मद बिन तुगलक का शासनकाल एक युगांतरकारी घटना है। अपने 26 वर्षो के शासनकाल में तुगलक ने अनेक योजनाओं को कार्यान्वित करने की चेष्टा की और वांछित फल न मिलने के कारण उसका अंत निराशाजनक स्थिति में हुआ। वह कई विषयों का ज्ञाता था किंतु जनता के मनोभावों को समझने में उसने बड़ी भूल की। इस कारण अनेक विद्वान उसे 'बदनसीब आदर्शवादी' "रक्त पिपासु अत्याचारी" और "स्वप्न देखने वाला" की संज्ञा देते हैं।

प्रारंभिक जीवन..

मोहम्मद बिन तुगलक का वास्तविक नाम फकरुदीन मोहम्मद जूना खान था। वह गाजी मलिक यानी गयासुद्दीन का जेष्ट पुत्र था, जो दीपालपुर का सूबेदार एवं पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र का रक्षक था। तुगलक को पिता से विरासत में सैनिक योग्यता प्राप्त थी। उसने अपने साहस एवं सैनिक क्षमता का परिचय देते हुए और अश्वसेना के अध्यक्ष से प्रगति कर के दिल्ली के सुल्तान के पद पर प्रतिष्ठित हो गया। उसने पिता के विश्वास एवं सहयोग से खिलजी वंश का अंत किया। गयासुद्दीन तुगलक ने उसे उलूग खां की उपाधि प्रदान की। उसने बंगाल अभियान के बाद एक स्वागत समारोह में अपने पिता की हत्या करवा दी और स्वयं दिल्ली का सुल्तान बन गया। उसका शासनकाल 1325 – 1351 ईस्वी तक था।

बिन तुगलक का राज्यारोहण–

गयासुद्दीन के हत्या के समय मोहम्मद बिन तुगलक तुगलकाबाद में था। पिता के हत्या के 40 दिन बाद वह दिल्ली आया और बलबन के लाल किले में उसका राज्याभिषेक हुआ। इस समारोह में दिल्ली की सजावट देखने योग्य थी। सारी दिल्ली लाल एवं पीले फूलों से सुसज्जित उद्यान लग रही थी। इस अवसर पर तुगलक ने चांदी एवं सोने के सिक्के दर्शकों के बीच बाटे। उसने अपना नाम मोहम्मद तथा उपनाम अब्दुल मुजाहिद रखा। उसने यह घोषणा की कि "मेरे सरनेम पूर्ण दृष्टि में

Dr Guddy Kumari A.N.D College)

राज्य के सारे वृद्ध व्यक्ति मेरे पिता एवं प्रत्येक युवक बहराम खा के समान मेरा भाई है। इस अवसर पर उसने अनेक उपाधियों का वितरण किया।

राजत्व सिद्धांत एवं धार्मिक दृष्टिकोण:–

मोहम्मद बिन तुगलक अशोक के बाद भारत का प्रथम मुस्लिम सम्राट था। जिसने भारत के राजनीतिक एवं प्रशासनिक एकता को व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न किया। उत्तर एवं दक्षिण के पृथक अस्तित्व को समाप्त कर सांस्कृतिक एकता लाने के लिए दिल्ली एवं दौलताबाद को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया।

मोहम्मद बिन तुगलक धर्म–दर्शन का मेधावी विद्यार्थी था। वह वाद विवाद के माध्यम से धार्मिक समस्याओं का निदान ढूंढता था। उसके वाद विवाद में सभी जाति के लोग भाग लेते थे। हिंदुओं के प्रति उदार नीति के कारण रूढिवादियो ने उसे इस्लाम विरोधी कहा। वस्तुतः मोहम्मद बिन तुगलक भारत का प्रथम सुल्तान था जो होली जैसे धार्मिक त्योहारों एवं समारोह में भाग लेता था। उसने भारत के कई मंदिरों का दर्शन भी किया था।

मोहम्मद बिन तुगलक ने राज्य सेवा में कुलीन वर्ग के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। और वह योग्यता के आधार पर पदाधिकारियों की नियुक्ति करता था। वह कानून पर भी वर्ग विशेष का अधिपत्य पसंद नहीं करता था। इसलिए उसने न्याय पर वर्ग विशेष का एकाधिकार समाप्त करने के लिए काजी का पद अन्य वर्गों के लिए भी सुरक्षित कर दिया।

सुल्तान ने आंतरिक शासन व्यवस्था को संगठित करने के उद्देश्य से निम्नलिखित योजनाओं को लागू किया:–

✓राजस्व सुधार:–

मध्य काल में भू राजस्व राज्य की आय का मुख्य स्रोत था। अतः सुल्तान ने इसमें सुधार लाने के लिए प्रांतीय सुबेदारों एवं कोषाध्यक्ष को यह आदेश दिया कि वह प्रांतीय आय व्यय से संबंधित एक रजिस्टर तैयार करें तथा आय व्यय का नियमित ब्योरा सुल्तान के पास भेजें। आय–व्यय की जांच कड़ाई से की जाती थी। इसका निरीक्षण करने के लिए शत्ताअधिकारी की नियुक्ति की गई। राजस्व सुधार के परिणाम के संबंध में प्रमाणिक जानकारी नहीं है।

✓ दोआब में कर वृद्धि:–

गंगा एवं यमुना के बीच वाले क्षेत्र को दोआब कहा जाता था। वहां अत्यधिक उपज के कारण किसान सुखी संपन्न थे, वे सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह करते आ रहे थे। शांति के लिए सुल्तान ने उस पर अत्यधिक कर लगा दिया। यह कर वहां उस समय लगाए गए जब दोआब के किसान अकाल सूखा एवं बाढ़ से ग्रस्त थे। इस प्रकार वहां कर बढ़ाने से वहां के लोग तबाह हो गए और वे सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर दिए। वे लोग खेती बाड़ी छोड़ कर चोरी डकैती करने लगे। कुछ स्थानों पर सत्ताअधिकारियों को मार डाला गया। सुल्तान ने इस विद्रोह को तो दबा दिया लेकिन सुल्तान को इससे काफी हानि हुई। सुल्तान को कर भी प्राप्त नहीं हुआ और किसानों की खेती बाड़ी भी समाप्त हो गई।

✓ कृषि का पुनर्स्थापना :–

मोहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में संयोग से 1326 – 1341 ई के बीच कई बार अकाल पड़ा। कृषि चौपट हो गई। राजा ने कृषि के पुनर्स्थापना के लिए साझा खेती की पद्धति अपनाई किंतु असफल रहा। उसके बाद भूमि को दो भागों में बांट दिया गया। यह सारे भूमि बंजर थे, जिस पर राजा ने जितना व्यय किया वह सब बेकार गया। अतः व्यावहारिकता एवं उचित निरीक्षण के अभाव में कृषि पुनर्स्थापना की योजना भी असफल हो गई।

Dr Guddy Kumari(A.N.D College)

✓ राजधानी परिवर्तन एवं उसके पहले की तैयारी:–

सर्वप्रथम राजधानी परिवर्तन की बात राजा के मस्तिष्क में 1326–27 ई में आया। राजधानी परिवर्तन उसके योजनाओं का सबसे प्रलापपूर्ण एवं प्रतिक्रियावादी योजना माना गया है। उसने अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर दौलताबाद को बनाई। उसने सारे लोगों को दिल्ली छोड़ने का आदेश दिया। उसके राजधानी परिवर्तन के संबंध में इतिहासकारों के अनेक मत हैं। कोई कहता है कि दौलताबाद तुगलक साम्राज्य का मध्य वाला क्षेत्र था, या वह मुस्लिम संस्कृति का प्रचार कर एवं दक्षिण एवं उतर के बीच की दूरी को समाप्त करना चाहता था, या वह दिल्ली के लोगों को दंड देना चाहता था या वह मंगोल आक्रमण से राज्य को सुरक्षित रखना चाहता था।

वस्तुत सुल्तान की राजधानी परिवर्तन सुनियोजित योजना थी। सुल्तान ने उसके लिए सारे प्रबंध कर लिए थे। पानी के लिए कुआं एवं रहने के लिए आवास आदि। इसका परिणाम यह हुआ कि जब 1335 ई में सुल्तान स्वयं देवगिरी गया तो वहां की कठिनाइयों को देखकर वहां के असंतुष्ट नागरिकों को पुनः दिल्ली लौटने का आदेश दिया। इस प्रकार उसकी राजधानी परिवर्तन असफल रही।

राजधानी परिवर्तन राजा एवं प्रजा दोनों के लिए कष्ट में सिद्ध हुआ। इससे राजा की प्रतिष्ठा में कमी आ गई वह अपनी योजना को कार्य रूप नहीं दे सका। उच्च वर्ग भी वर्षों तक वैभव एवं समृद्धि प्राप्त नहीं कर सके। इस घटना को इतिहास में एक पथभ्रष्ट शक्ति का स्मारक माना गया है।

✓सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन:–

मोहम्मद बिन तुगलक नवीन अन्वेषण में दिलचस्पी लेता था। उसने प्रतीक मुद्रा का प्रचलन किया। पहले चांदी के सिक्के को टंका और तांबे के सिक्के को जीतल कहा जाता था। उसने चांदी के बदले तांबे का सिक्का चलाया और उसका प्रचलन चांदी के सिक्के की तरह किया। लेकिन उसकी यह योजना असफल रहे क्योंकि जनता जाली सिक्कों का प्रयोग करने लगे। जिससे आयात निर्यात में बाधा पड़ गया एवं सुल्तान को अपनी योजना वापस लेना पड़ा।

इस प्रकार सुल्तान की सारी योजनाएं असफल रही क्योंकि इसकी सारी योजनाएं भविष्य की बात थी।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr Gyanday Kumar(A.N.D College)